



बनारस घाट को चित्रित करने वाले प्रमुख भारतीय चित्रकारों का अध्ययन।

सतीश कुमार पटेल

शोध छात्र, चित्रकला विभाग, दृश्य कला संकाय, बीएचयू,

परिचय -

काशी या वाराणसी जो बनारस के भी नाम से प्रसिद्ध है। यह दुनिया के प्राचीन नगरों में से एक माना जाता है जिसका उल्लेख हमें जातक कथा, अथर्ववेद, रामायण, महाभारत, स्कंदपुराण, हरिवंशपुराण व चीनीयात्री ह्वेनसांग, फ्राययान के द्वारा भी मिलता है। यहां पर गौतम बुद्ध, पार्श्वनाथ, महावीर, तुलसीदास, कबीर जैसे अनेक विद्वानों ने अपने ज्ञान का परिचय दिये हैं। बनारस एक शहर ही नहीं बल्कि अपनी सांस्कृतिक (धर्म व मोक्ष का केंद्र), धार्मिक (शिव की नगरी) तथा आध्यात्मिक (आत्मिक मुक्ति व पूजा पाठ) गहराई के लिए विश्वभर में महत्वपूर्ण माना जाता है। बनारस में गंगा नदी के तट पर कुल 84 घाटों (मंदिर, सीढ़ी, भवन) की श्रृंखला अनेकों राजाओं ने धार्मिक विश्वास के साथ राजसी विजय स्वरूप में बनवाए। यहां ईश्वरीय शक्ति का संचरण आस्था, मंदिरों के रूप में होता है। वाराणसी की अद्भुत विरासत देखने के लिए 19वीं शताब्दी में कंपनी शैली व्यापार के रूप में आई, जिनके साथ विद्वान, चित्रकार, खोजकर्ता, शोधकर्ता एवं अन्य यात्री आये। विदेशी चित्रकार विलियम होर्सेज, थामस डैनियल एवं एडवर्ड लियर ने बनारस घाट की नित्य क्रिया-कलापों को देख प्रभावित होकर अनेको रंगीन चित्र, छायांकन बनाये, तथा जेम्स प्रिंसेप ने लिथोप्रिंट द्वारा बनारस घाट के वास्तविक स्वरूप का आध्यात्मिक अभिव्यक्ति दर्शन श्याम - श्वेत में लाइन ड्राइंग से कराते हैं। भारत में बनारस घाट का शुरुआती दौर के उम्मीदवार चित्रकारों में नन्द लाल बोस, विनोद बिहारी मुखर्जी, यन.यश. बेंद्रे, यम. एफ. हुसैन, इंद्र कुमार दुगर ने बनारस घाट को अपने यथार्थ रूपों के साथ आध्यात्मिक स्वरूपों में चित्रण किये। इन चित्रकारों के पश्चात बनारस घाट चित्रों को सर्वाधिक ख्याति रामकुमार ने दिलाई, जो एक लेखक भी थे। इनके चित्र में अमूर्त व ज्यामिति दोनों रूपों का समावेश तैल रंगों से बने घाट की सीढ़ियां, गंगा के पानी पर नाव, पेड़ों में दिखते हैं। दिलीप दास गुप्ता ने जलरंग से शांत वातावरण व मनु पारेख ने चमचमाती रंग, आंभगिक रेखाओं द्वारा चित्र बनाएं। फिर विजय सिंह ने बनारस घाट को श्याम-स्वेत रंगों द्वारा रहस्यवादी अमूर्त शैली में कार्य किए। इनके चित्रण में श्याम रंग को लगाने का इतना सटीक, कॉन्फिडेंस है कि उतना रामकुमार और हुसैन को नहीं हुआ होगा। यस. प्रणाम के. सिंह, दीप्ति प्रकाश मोहंती, संतोष सिंह के साथ परेश मैती की कलाकृति में नीलकाल जैसा तेज चमक आभा दिखाई देता है। तापस घोषाल के समकालीन रहे परमेश पाल ने काल्पनिक नंदी कैनवास पर चमकीले रंग से बनाकर बनारस घाट का नया दर्शन करवाये। और अमित भर त्रिआयामी मूर्ति समान बनारस घाट को प्रकाश से आकर्षक करने लगे। आनंददास, संदीप छत्रबंद, सोमनाथ बोथ, सतीश खन्ना, नाना साहेब जैसे सभी चित्रकार को बनारस घाट चित्रण करते समय उन्हें निराकार एव साकार रूप दिखाई पड़ता है जहां बनारस घाट पर कर्म और मोक्ष दोनों के दर्शन होते हैं।

बनारस के घाट को चित्रित करने वाले यूरोपीय चित्रकार

- विलियम होजसे (1744- 1797 ई० इंग्लैण्ड)
- थामस डेनियल (1749-1840 ई० इंग्लैण्ड)



शीर्षक – बनारस के घाट
कलाकार – विलियम होजसे
सन् – 1787 ई०
माध्यम – तैल रंग व कैनवास
साईज – 915mm. X 1308 mm.
संग्रह – रायल एकेडमी आफ आर्ट, लंदन
वेबसाइट -https://en.Wikipedia.org/wiki/William_Heirens



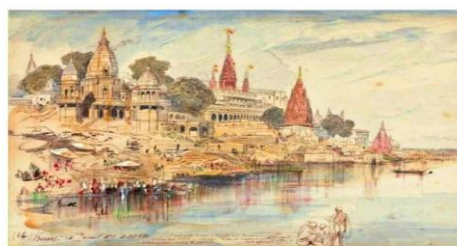
शीर्षक – शिवाला घाट
कलाकार – थॉमस डेनियल
सन् – 1789 ई०
माध्यम – तैल रंग व कैनवास
साईज – 17 X 12 in.
संग्रह – रायल एकेडमी आफ आर्ट, लंदन
वेबसाइट -https://en.Wikipedia.org/wiki/Thomas_Denial

- जेम्स प्रिन्सेप (1799-1840 ई० इंग्लैण्ड)



शीर्षक – पवित्र शहर बनारस
कलाकार – जेम्स प्रिन्सेप
सन् – 1832 ई०
माध्यम – लिथो प्रिन्ट व पेपर
साईज – 21 in. X 17 in.
संग्रह – रायल एकेडमी आफ आर्ट, लंदन
वेबसाइट -<https://en.Wikipedia.org/wiki/James Prinsep>

- एडवर्ड लियर (1812-1888 ई० इंग्लैण्ड)



शीर्षक – बनारस के घाट
कलाकार – एडवर्ड लियर
सन् – 1866 ई०
माध्यम – जल रंग व पेपर
साईज – 18 in. X 22 in.
संग्रह – रायल एकेडमी आफ आर्ट, लंदन
वेबसाइट -https://en.Wikipedia.org/wiki/Edward_Lear

भारतीय चित्रकारों के चित्रों में बनारस घाट का अंकन

- नंदलाल बोस (1882-1966 ई० बिहार)



शीर्षक – बनारस घाट तथा राजमहल में एक नाव
कलाकार – नंदलाल बोस
सन् – 1930 ई०
माध्यम – पोस्टकार्ड पर पेन और स्याही

- मकबूल फिदा हुसैन (1915-2011 ई० महाराष्ट्र)



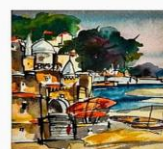
शीर्षक – बनारस घाट
कलाकार – एम०एफ० हुसैन
सन् – 1975 ई०
माध्यम – एक्रेलिक कलर व कैनवास, सिल्क स्क्रीन प्रिन्ट

- रामकुमार (1924-2018 ई० शिमला)



शीर्षक – बनारस घाट लैण्डस्केप
कलाकार – रामकुमार
सन् – 2016 ई०
माध्यम – तैल रंग व कैनवास

- दिलीपदास गुप्ता (1939-2006 ई० शिमला)



शीर्षक – बनारस घाट लैण्डस्केप
कलाकार – दिलीपदास गुप्ता
सन् – 2001 ई०
माध्यम – जल रंग व पेपर

- मनु पारेख (1939 ई० – अबतक, अहमदाबाद)



शीर्षक – बनारस की शाम
कलाकार – मनु पारेख
सन् – 2004 ई०
माध्यम – तैल रंग व कैनवास

- विजय सिंह (1954 ई०- अबतक, मिर्जापुर)



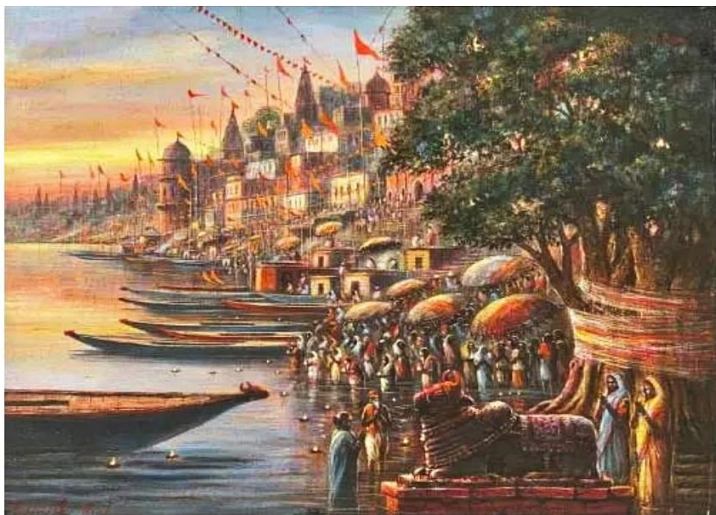
शीर्षक – बनारस घाट
कलाकार – विजय सिंह
सन् – 2016 ई०
माध्यम – एक्वेलिक व पेपर

- परेश मैती (1965 ई० – अबतक, पं० बंगाल)



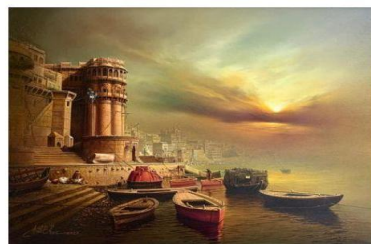
शीर्षक – बनारस के घाट पर रोशनी
कलाकार – परेश मैती
सन् – 2016 ई०
माध्यम – एक्वेलिक रंग व कैनवास

- परमेश पाल (1970 ई० अबत तक, पं० बंगाल)



शीर्षक – बनारस के घाट
कलाकार – परमेश पाल
सन् – 2024 ई०
माध्यम – एकेलिक रंग व कैन्वास

- अमित भर (1973 ई० अब तक, पं० बंगाल)



शीर्षक – बनारस घाट
कलाकार – अमित भर
सन् – 2024 ई०
माध्यम – तैल रंग व कैन्वास



सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- हरिशंकर, 'काशी के घाट' कलात्मक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1996
- मिश्रा, एच० एन०, 'बनारस की चित्रकला' (18वीं से 20वीं शती), कला प्रकाशन, वाराणसी, 2002
- प्रिंसेप, जेम्स, बनारस इलस्ट्रेटेड इन ए सीरीज ऑफ ड्राइंग, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2024
- प्रसाद, शत्रुघ्न, 'प्रमुख आधुनिक भारतीय कलाकारों की दृष्टि में बनारस के घाट', अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, दृश्यकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, 2003
- आर्चर, मि०, कंपनी पेंटिंग्स ऑफ द ब्रिटिश प्रियेड, मैपिन इंटरनेशनल, 1992
- ए, दियाना एल०, बनारस : सिटी ऑफ लाइफ, पेंगुइन बुक्स, 2005
- दीक्षित, उत्तमा, काशी लोक संस्कृति एवं लोक, चित्रकला, पिलग्रिम्स पब्लिशिंग, वाराणसी, 2023